श्रीसीतापतये नमः

श्रीवाल्मीकिमहामुनिकृतशतकोटिरामचरितान्तर्गतं—

आनन्दरामायणम्

'ज्योत्स्ना'ऽऽख्या भाषाटीकयाऽऽटीकितम्

विलासकाण्डम्

प्रथमः सर्गः

(शिवकृत रामस्तवराज)

विष्णुदास उवाच

गुरो ते प्रष्टुमिच्छामि तद्वदस्व सविस्तरम् । स्तुतो रामः शिवेनात्र येन रामस्तवेन हि ॥ १ ॥
तं रामस्तवराजं मे विस्तरेण प्रकाशय ।

श्रीशिव उवाच

इति शिष्यवचः श्रुत्वा रामदासोऽब्रवीद्वचः ॥ २ ॥

श्रीरामदास उवाच

सम्यक् पृष्टं त्वया वत्स सावधानमनाः शृणु । प्रोच्यते रामचन्द्रस्य स्तवराजो मयाऽधुना ॥ ३ ॥
यत्परं यद्गुणाधारं यज्ज्योतिरमलं शिवम् । तदेव परमं तत्त्वं कैवल्यपददायकम् ॥ ४ ॥
श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञितम् । ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदुः ॥ ५ ॥
श्रीराम राम रामेति ये वदंत्यपि सर्वदा । तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः ॥ ६ ॥
स्तवराजः पुरा प्रोक्तः शिवेन परमात्मना । तमहं संप्रवक्ष्यामि हरिध्यानपुरःसरम् ॥ ७ ॥
तापत्रयाग्निशमनं सर्वाघौघनिकृन्तनम् । दारिद्र्यदुःखशमनं सर्वसंपत्प्रदायकम् ॥ ८ ॥

विष्णुदासने कहा—हे गुरो ! मैं यह जानना चाहता हूँ कि शिवजीने किस रामस्तराजसे रामचन्द्रजीकी स्तुति की थी ॥ १ ॥ कृपा करके आप मुझे वह रामस्तवराज बतला दीजिये । इस तरह अपने शिष्यकी बात सुनकर श्रीरामदासने कहा—॥ २॥ हे वत्स ! तुमने मुझसे बहुत अच्छी बात पूछी है । मैं तुम्हें वह स्तवराज बतलाया हूँ, सावधान होकर सुनो ॥ ३ ॥ जो संसारमें सबसे श्रेष्ठ है, जो सब सद्गुणोंका आधार है, जो एक निर्मल एवं पवित्र ज्योति है, वह ही परम प्रधान तत्त्व है और मोक्षपददायक है ॥ ४ ॥ बड़े-बड़े विद्वानोंका कहना है कि 'श्रीराम' यह सर्वोत्तम तारक मन्त्र है और ब्रह्महत्या प्रभृति महान् पातकोंका नाशक है ॥ ५ ॥ जो सज्जन सर्वदा 'श्रीराम' नामका जप करते हैं, उन्हें जबतक कि वे संसारमें रहते हैं, तबतक सांसारिक भोग मिलते हैं और शरीर त्याग करनेपर मुक्ति मिल जाती है ॥ ६ ॥ जो मैं तुमसे कहनेवाला हूँ, इस स्तवराजको शिवजीने स्वयं मुझसे कहा था । उसीको आज भगवान्का ध्यान करके मैं तुमसे कहूँगा ॥ ७ ॥ यह तीनों (दैहिक, दैविक और भौतिक) तापोंको नष्ट करनेवाला,

विज्ञानफलदं पुण्यं मोक्षैकफलदायकम् । नमस्कृत्य प्रवक्ष्यामि रामं कृष्णमनामयम् ॥ ९ ॥
अयोध्यानगरे रम्ये रत्नमंडपमध्यगे । ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले रत्नसिंहासने शुभे ॥१०॥
तन्मध्येऽष्टदलं पद्मं नानारत्नोपशोभितम् । स्मरेन्मध्ये दाशरथिं सहस्रादित्यतेजसम् ॥११॥
पितुरासनमासीनमिंद्रनीलसमप्रभम् । कोमलांगं विशालाक्षं विद्युद्वर्णांबरावृतम् ॥१२॥
भानुकोटिप्रतीकाशं किरीटेन विराजितम् । रत्नग्रैवेयकेयूरवरकुंडलमंडितम् ॥१३॥
रत्नकंकणमंजीरकटिसूत्रैरलंकृतम् । श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं मुक्ताहारोपशोभितम् ॥१४॥
चिंतामणिसमायुक्तं रत्नमालाविराजितम् । दिव्यरत्नसमायुक्तं मुद्रिकाभिरलंकृतम् ॥१५॥
कर्पूरागरुकस्तूरीदिव्यगंधानुलेपनम् । तुलसीकुंदमंदारपुष्पमाल्यैरलंकृतम् ॥१६॥
राघवं द्विभुजं वीरं राममीषत्स्मिताननम् । योगशास्त्रेष्वभिरतं योगेशं योगदायकम् ॥१७॥
सदा सौमित्रिभरतशत्रुघ्नैरुपसेवितम् । विद्याधरसुराधीशसिद्धगधर्वकिन्नरैः ॥१८॥
योगींद्रैर्नारदाद्यैश्च स्तूयमानमहर्निशम् । विश्वामित्रवसिष्ठाद्यैर्ऋषिभिः परिसेवितम् ॥१९॥
सनकादिमुनिश्रेष्ठैर्योगिवृन्दैः समावृतम् । रामं रघुवरं वीरं धनुर्वेदविशारदम् ॥२०॥
मंगलायतनं देवं रामं राजीवलोचनम् । सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञमानन्दमतिसुन्दरम् ॥२१॥
कौसल्यातनयं रामं धनुर्बाणधरं हरिम् । एवं संचिंतयेद्विष्णुं यज्ज्योतिर्ज्योतिषां परम् ॥२२॥
प्रहृष्टमानसो भूत्वा सभायां वृषभध्वजः । सर्वलोकहितार्थाय तुष्टाव रघुनन्दनम् ॥२३॥
कृतांजलिपुटो भूत्वा चिन्तयन्नद्भुतं हरिम् ।

श्रीशिव उवाच

यदेकं तत्परं नित्यं यदनन्तं चिदात्मकम् ॥२४॥

पापसमूहका नाशक, दारिद्र्य और दुःखका दमन करनेवाला तथा समस्त सम्पदाओंका दाता है ॥ ८ ॥ यह विज्ञान (ईश्वरसम्बन्धी ज्ञान) का फल देनेवाला, पवित्र और मोक्षका साधक है। मैं श्यामस्वरूपधारी राम-कृष्णका ध्यान करके वह स्तवराज तुमको बतला रहा हूँ ॥ ९ ॥ श्रोताको चाहिये कि वह अयोध्यानगरीके रत्नोंसे सुसज्जित एक सुन्दर भवनमें कल्पवृक्षके नीचे ऐसे रत्नसिंहासन, जिसमें नाना प्रकारके मणियोंसे सुशोभित अष्टदल कमल है, उसपर बैठे हुए हजारों सूर्यकी भाँति तेजोमय रामचन्द्रजीका ध्यान करे ॥१०॥११॥ रामचन्द्रजी अपने पिता (महाराज दशरथ) के आसनपर बैठे हैं, इन्द्रनील मणिकी भाँति जिनकी श्याम मूर्ति है, जिनके कोमल अङ्ग हैं, बड़ी-बड़ी आँखें हैं, बिजलीकी तरह चमकता पीताम्बर पहिने हुए हैं, जिसमें करोड़ो सूर्योंके समान प्रकाश है, मस्तकपर किरीट धारण किये हैं, उरःस्थलमें श्रीवत्स तथा कौस्तुभ मणि है और गलेमें चिन्तामणि तथा कितने ही रत्नोंकी मालायें पहने हैं। उनकी उँगलियोंमें बहुमूल्य रत्नोंसे जड़ी अंगूठियाँ पड़ी हैं ॥ १२-१५ ॥ कर्पूर, अगर और कस्तूरीसे मिला हुआ चन्दन उनके सारे शरीरमें लगा हुआ है। तुलसी तथा कुन्द-मन्दार आदिके पुष्पोंसे जिनका शृङ्गार किया हुआ है, जिनके केवल दो भुजायें हैं, होठोंपर मन्द मुस्कान है, जो योगशास्त्रके वार्तालापमें मग्न हैं, लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न जिनकी सेवामें लगे हुए हैं, विद्याधर, देवता, सिद्ध, गन्धर्व और नारदादि योगीन्द्र रात-दिन जिनकी स्तुति किया करते हैं, विश्वामित्र-वसिष्ठादि ब्रह्मर्षि जिनकी परिचर्यामें लगे हुए हैं। सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार आदि मुनि दर्शनार्थ खड़े हैं। जो रघुवंशमें सर्वप्रधान वीर तथा धनुर्वेदमें निपुण हैं। जो मंगलभवन हैं, कमलके समान जिनके नेत्र हैं, जो सब शास्त्रोंके तत्त्वज्ञ, आनन्दमूर्ति, अतिशय सुन्दर कौसल्याके सुवन हैं और धनुष-बाण धारण किये हैं, ऐसे भगवान् रामचन्द्रका ध्यान करे। जो सब ज्योतियोंमें श्रेष्ठ हैं। ऐसे अद्भुत स्वरूपका ध्यान करके हर्षसे गद्गद होकर शिवजीने संसारके कल्याणार्थ दोनों हाथ जोड़कर भगवान रामचन्द्रकी स्तुति की ॥ १६-२३ ॥

Scanned with OKEN Scanner

यदेकं व्यापकं लोके तद्रूपं चिन्तयाम्यहम् । सर्वत्रैलोक्यसौख्यार्थं रामभक्त्यतिवृद्धये ॥२५॥
विज्ञानहेतुं विमलायताक्षं प्रज्ञानसंदिव्यसुखैकरूपम् ।
श्रीरामचन्द्रं हरिमादिदेवं विश्वेश्वरं राममहं भजामि ॥२६॥
कविं पुराणं पुरुषं परेशं सनातनं योगिनमीशितारम् ।
अणोरणीयांसमनंतवीर्यं प्राणेश्वरं राममहं भजामि ॥२७॥

नारायणं जगन्नाथमभिरामं जगत्पतिम् । कविं पुराणं वागीशं रामं दशरथात्मजम् ॥२८॥
राजराजं रघुवरं कौसल्यानंदवर्द्धनम् । भगं वरेण्यं विश्वेशं रघुनाथं जगद्गुरुम् ॥२९॥
सत्यं सत्यप्रियं श्रेष्ठं जानकीवल्लभं प्रभुम् । सौमित्रिपूर्वजं शान्तं कामदं कमलेक्षणम् ॥३०॥
आदित्यं रविमीशानं घृणिं सूर्यमनामयम् । आनन्दरूपिणं सौम्यं राघवं करुणाकरम् ॥३१॥
जामदग्न्यं तपोमूर्तिं रामं परशुधारिणम् । वाक्पतिं वरदं वाच्यं श्रीपतिं पक्षिवाहनम् ॥३२॥
श्रीशार्ङ्गधारिणं रामं चिन्मयानंदविग्रहम् । हलधारिणमीशानं बलरामं कृपानिधिम् ॥३३॥
श्रीवल्लभं कलानाथं जगन्मोहनमच्युतम् । मत्स्यकूर्मवराहादिरूपधारिणमव्ययम् ॥३४॥
वासुदेवं जगद्योनिमनादिनिधनं हरिम् । गोविन्दं गोपतिं विष्णुं गोपीजनमनोहरम् ॥३५॥
गोपालं गोपरीवारं गोपकन्यासमावृतम् । विद्युत्पुंजप्रतीकाशं रामं कृष्णं जगन्मयम् ॥३६॥
गोगोपिकासमाकीर्णं वेणुवादनतत्परम् । कामरूपं कलावंतं कामिनां कामदं प्रभुम् ॥३७॥
मन्मथं मथुरानाथं माधवं मकरध्वजम् । श्रीधरं श्रीकरं श्रीशं श्रीनिवासं परात्परम् ॥३८॥

शिवजीने कहा—जो एक है, जिससे बढ़कर संसारमें और कुछ है ही नहीं। जो अनन्त, नित्य एवं अविनाशी है। जो अकेला रहता हुआ भी समस्त विश्वमें व्याप्त है, मैं भगवानके ऐसे स्वरूपका ध्यान करता हूँ ॥ २४ ॥ २५ ॥ जो विज्ञानके एकमात्र हेतु हैं, जिनकी निर्मल और विशाल आँखें हैं, जो पूर्ण ज्ञानकी अवस्थामें ज्ञानियोंको दिव्यरूप होकर दर्शन देते हैं ऐसे श्रीहरि, आदिदेव तथा विश्वेश्वर रामचन्द्रकी मैं वन्दना करता हूँ ॥ २६ ॥ जो स्वयं कवि हैं, सबसे वृद्ध हैं, सबके स्वामी हैं, सनातन हैं तथा योगियोंके भी स्वामी हैं। जो सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म हैं, जिनमें अनन्त पराक्रम है, जो समस्त चराचर जीवोंके प्रभु हैं, ऐसे रामचन्द्रका मैं भजन करता हूँ ॥ २७ ॥ नारायणस्वरूप, समस्त जगत्के स्वामी, अतिशय सुन्दर, वागीश तथा दशरथजीके तनय रामचन्द्रजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ २८ ॥ जो राजाओंके भी राजा हैं, जो रघुवंशमें सर्वश्रेष्ठ हैं, जो कौसल्याका आनन्द बढ़ानेवाले हैं, जो तेजोमय हैं, जो संसारके त्राणकर्ता हैं, जो संसारके गुरु हैं, जो सत्यस्वरूप है, जिनको सत्य ही प्रिय है, जो सीताजीके पति हैं, जो लक्ष्मणके बड़े भ्राता हैं, जिनका शान्त स्वभाव है, जो अपने भक्तोंकी कामनाओंको पूर्ण करते हैं, कमल सरीखे जिनके नेत्र हैं, जो अदितिके पुत्र हैं, जो सूर्यरूप हैं, जो शिवरूप और आरोग्यस्वरूप हैं, जो आनन्दके साक्षात् मूर्ति हैं, जो सौम्य प्रकृतिके हैं और जो करुणाके भण्डार हैं ॥ २९–३१ ॥ जो जमदग्निके पुत्र (परशुराम) हैं, जो अभिलषित कामनाओंको पूर्ण करते हैं, जो लक्ष्मीपति हैं, जिनका पक्षी (गरुड़) वाहन है, जो लक्ष्मी और शार्ङ्ग नामक धनुष धारण करते हैं, जिनका नित्य आनन्दमय शरीर है, जो हलको धारण करनेवाले बलरामस्वरूप हैं, जो लक्ष्मीके प्रिय हैं, जो सब कलाओं-को जानते हैं, जो संसारको मुग्ध करनेमें समर्थ हैं, जिसका कभी विनाश नहीं होता, जो मत्स्य-कूर्म-वराह आदि रूप धारण करते हैं और जो अविनाशी हैं ॥ ३२–३४ ॥ जो वसुदेवके पुत्र, संसारके स्रष्टा, जन्म-मरणसे रहित, इन्द्रियोंको प्रसन्न करनेवाले, इन्द्रियोंके पति, विष्णुस्वरूप, गोपियोंने मनको चुरानेवाले और गौओंके रक्षक हैं, ऐसे राम-कृष्ण तथा जगन्मय भगवान्‌को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ जो गौओं और गोपियोंसे घिरे रहते हैं, जो वंशी बजानेमें तत्पर रहते हैं, जो जब जैसा चाहते वैसा अपना स्वरूप बना लेते हैं, जो समस्त कलाओंसे पूर्ण हैं, जो कामनावाले मनुष्योंकी कामनाओंको पूर्ण करते हैं और कामदेवरूपसे सबके

भूतेशं भूपतिं भद्रं भूतिदं भूरिभूषणम् । सर्वदुःखहरं वीरं दुष्टदानवमर्दनम् ॥३९॥
श्रीनृसिंहं महाविष्णुं महांतं दीप्ततेजसम् । चिदानंदमयं नित्यं प्रणवं ज्योतिरूपकम् ॥४०॥
आदित्यमंडलगतं निश्चितार्थस्वरूपिणम् । भक्तिप्रियं पद्मनेत्रं भक्तानामीप्सितप्रदम् ॥४१॥
कौसल्येयं कलामूर्तिं काकुत्स्थं कमलाप्रियम् । सिंहासने समासीनं नित्यव्रतमकल्मषम् ॥४२॥
विश्वामित्रप्रियं दांतं स्वदारनियतव्रतम् । यज्ञेशं यज्ञपुरुषं यज्ञपालनतत्परम् ॥४३॥
सत्यसंधं जितक्रोधं शरणागतवत्सलम् । सर्वक्लेशापहरणं विभीषणवरप्रदम् ॥४४॥
दशग्रीवहरं रुद्रं केशवं केशिमर्दनम् । बालिप्रशमनं वीरं सुग्रीवेप्सितराज्यदम् ॥४५॥
नरवानरदेवैश्च सेवितं हनुमत्प्रियम् । शुद्धं सूक्ष्मं परं शांतं तारकब्रह्मरूपिणम् ॥४६॥
सर्वभूतात्मभूतस्थं सर्वाधारं सनातनम् । सर्वकारणकर्तारं निदानं प्रकृतेः परम् ॥४७॥
निरामयं निराभासं निरवद्यं निरंजनम् । नित्यानन्दं निराकारमद्वैतं तमसः परम् ॥४८॥
परात्परतरं नित्यं सत्यानन्दचिदात्मकम् । मनसा शिरसा नित्यं प्रणमामि रघूत्तमम् ॥४९॥

भूतोद्भवं वेदविदां वरिष्ठमादित्यचंद्रानिलसुप्रभावम् ।
सर्वात्मकं सर्वगतस्वरूपं नमामि रामं तमसः परस्तात् ॥५०॥
निरञ्जनं निष्प्रतिमं निरीहं निराश्रयं कारणमादिदेवम् ।
नित्यं ध्रुवं निर्विषयस्वरूपं निरंतरं राममहं भजामि ॥५१॥
भवाब्धिपोतं भरताग्रजं तं भक्तिप्रियं भानुकुलप्रदीपम् ।
भूताधिनाथं भुवनाधिपत्यं भजामि रामं भवरोगवैद्यम् ॥५२॥
सर्वाधिपत्यं रणरंगधीरं सत्यं चिदानन्दसुखस्वरूपम् ।
सत्यं शिवं सज्जनहृन्निवासं ध्येयं परानन्दमहं भजामि ॥५३॥

मनको उद्विग्न किया करते हैं। जो मथुराके स्वामी हैं, जो लक्ष्मीके पति हैं, जो मकरध्वज, श्रीधर, श्रीकर, श्रीश, श्रीनिवास, परात्पर, भूतेश, भूपति, भद्र (कल्याणमय), भूतिद (सर्वसम्पत्तियोंके दाता), भूरिभूषण, (बहुत से भूषणोंको धारण करनेवाले) सब प्रकारके दुःखोंको हरनेवाले वीर और दुष्ट दानवोंका विनाश करनेवाले हैं, जो श्रीनृसिंह, महाविष्णु, महान् दीप्तिशाली, चिदानन्दमय, नित्य, प्रणव, ज्योतिरूप, आदित्यमण्डलमें विराजमान, निश्चितार्थस्वरूप, भक्तिप्रिय, कमललोचन, भक्तोंकी कामना पूर्ण करनेवाले, कौसल्याके सुवन, कालमूर्ति, काकुत्स्थ, कमलाप्रिय, सिंहासनासीन, नित्यव्रती और पापरहित हैं। जो विश्वामित्रके प्रिय, दान्त (जितेन्द्रिय) और एकपत्नीव्रती हैं। जो यज्ञेश, यज्ञपुरुष, यज्ञकी रक्षामें तत्पर, सत्यसंध, जितक्रोध, शरणागतवत्सल, सब क्लेशोंको हरनेवाले, विभीषणको वरदान देनेवाले, रावणका विनाश करनेवाले, रुद्र, केशव, केशिमर्दी, वालिविनाशक, वीर सुग्रीवको ईप्सित राज्य देनेवाले, नर-वानर और देवताओंसे सेवित, हनुमान्‌से सेवित, शुद्ध, सूक्ष्म, शान्त, ब्रह्मरूप, सब प्राणियोंके हृदयमें रहनेवाले, सर्वाधार, सनातन, सब कुछ कर्ता-धर्ता, प्रकृतिके मूल कारण, निरामय, निराभास, निरवद्य, निरञ्जन, नित्यानन्द, निराकार, अद्वैत, तमोगुणसे परे, सर्वश्रेष्ठ, नित्य, सत्य, आनन्द और चिन्मयस्वरूप हैं। उन श्रीरामचन्द्रजीको मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ ॥ ३७–४९ ॥ जो संसारके जन्मदाता हैं, विद्वानोंमें श्रेष्ठ हैं, सूर्य-चन्द्रमा और अग्निमें जिनका प्रकाश है, जो सर्वात्मा, सर्वस्वरूप और तमोगुणसे परे हैं। ऐसे रामचन्द्रको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५० ॥ निरञ्जन, निष्प्रतिम, निरीह, निराश्रय, सर्वत्राण, आदिदेव, नित्य, ध्रुव, विषय और स्वरूपसे परे रामचन्द्रजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५१ ॥ जो संसाररूपी महासागरके लिए जहाजके सदृश हैं, जो भरतके बड़े भ्राता, भक्तिप्रिय, भानुकुलके प्रदीप, भूताधिनाथ, भुवनरूपी जहाजके अधिपति और भवरूप रोगके वैद्य हैं, उन रामचन्द्रजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५२ ॥ जो सबके अधिपति, युद्धविद्यामें कुशल, सत्यस्वरूप

Scanned with OKEN Scanner

कार्यक्रियाकारणमप्रमेयं कविं पुराणं कमलायताक्षम् ।
कुमारवेषं करुणामयं तं कल्पद्रुमं राममहं भजामि ॥५४॥
त्रैलोक्यनाथं सरसीरुहाक्षं दयानिधिं द्वन्द्वविनाशहेतुम् ।
महाबलं वेदनिधिं सुरेशं सनातनं राममहं भजामि ॥५५॥
वेदांतवेद्यं कविमीशितारमनादिमध्यांतमचिंत्यमाद्यम् ।
अगोचरं निमलमेकरूपं परात्परं राममहं भजामि ॥५६॥
अशेषवेदात्मकमादिदेवमजं हरिं राममनन्तमूर्तिम् ।
अपारसंवित्सुखमेकरूपं नमामि राम तमसः परस्तात् ॥५७॥
तत्त्वस्वरूप पुरुष पुराणं स्वतेजसा पूरितविश्वमेकम् ।
राजाधिराजं रविमण्डलस्थ विश्वेश्वर राममह भजामि ॥५८॥
योगींद्रसंघैरपि सेव्यमानं नारायणं निर्मलमादिदेवम् ।
नतोऽस्मि नित्यं जगदेकनाथ हरिं चिदानंमयं मुकुन्दम् ॥५९॥
अशेषविद्याधिपतिं नमामि रामं पुराणं तमसः परस्तात् ।
विभूतिदं विश्वसृजं परेशं राजेंद्रमीशं रघुवशनाथम् ॥६०॥
अचिंत्यमव्यक्तमनंतरूपं ज्योतिर्मयं राममहं भजामि ।
अशेषसंसारविकारहीनमानंदसपूर्णसुखाभिरामम् ॥६१॥
नारायणं विष्णुमहं भजामि समस्तसाक्षिं तमसः परस्तात् ।
मुनींद्रगुह्यं पारेपूर्णमेकं कलानिधिं कल्मषनाशहेतुम् ॥
परात्परं यत्परमं पवित्रं नमामि रामं महतो महांतम् ॥६२॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च देवेंद्रो देवतास्तथा । आदित्यादिग्रहाश्चैव त्वमेव रघुनंदन ॥६३॥
तापसा ऋषयः सिद्धाः साध्याश्च मुनयस्तथा । विप्रा वेदाश्च यज्ञाश्च पुराणं धर्मसंहिताः ॥६४॥

सच्चिदानन्द सुखस्वरूप, सत्य, शिव, सज्जनोंके हृदयमें निवास करनेवाले और परमानन्दस्वरूप रामचन्द्रजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५३ ॥ जो कर्मोंके कारण, अप्रमेय, कवि, धैर्यशाली, पुराण पुरुष, कमलसरीखे विशाल नयनों युक्त, नित्य कुमारवेषधारी, करुणामय तथा कल्पवृक्षके समान सबकी अभिलाषा पूर्ण करनेवाले हैं, उन रामचन्द्रको मैं प्रणाम करता हूँ ॥५४॥ त्रिलोकीनाथ, सरसीरुह (कमल) के समान नेत्रोंवाले, दयानिधि, द्वन्द्व विनाशके एकमात्र हेतु, महाबली, वेदोंके निधान, सुरेश और सनातनस्वरूप रामचन्द्रजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५५ ॥ वेदान्तवेद्य, कवि, ईशिता, आदि-मध्य और अन्तसे रहित, अचिन्त्य, सबके आदिमें उत्पन्न होनेवाले, चक्षुरादि इन्द्रियोंसे अगोचर, निर्मल, एकरूप और तमोगुणसे परे रामचन्द्रजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ तत्त्वस्वरूप, पुराण पुरुष, केवल अपने प्रकाशसे समस्त विश्वको प्रकाश देनेवाले, राजाधिराज, रविमण्डलमें निवास करनेवाले और विश्वेश्वरस्वरूप रामचन्द्रजीको मैं प्रणाम करता हूँ। योगीन्द्रोंके समूहसे सेव्यमान, नारायण, निर्मल, आदिदेव, नित्य, जगत्के एकमात्र स्वामी, हरि, चिदानन्दमय और मुकुन्दस्वरूप रामचन्द्रको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ समस्त विद्याओंके भण्डार, तमसे परे, पुराणपुरुष, सम्पत्तियोंको देनेवाले, संसारके विकारोंसे पृथक् और सबको आनन्द देनेवाले रामचन्द्रजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ नारायण, विष्णु, सर्वसाक्षी, तमसे परे, ऋषियोंके ध्यानमें भी कठिनाईसे आनेवाले, परिपूर्णरूप एक, कलानिधि, कल्मषके नाशक, परम पवित्र और बड़ोंसे भी बड़े रामचन्द्रजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६२ ॥ हे रघुनन्दन ! ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, देवेन्द्र, देवता तथा आदित्यादि ग्रह सब कुछ तुम्हीं हो। तपस्वी,

Scanned with OKEN Scanner

वर्णाश्रमास्तथा धर्मा वर्णधर्मास्तथैव च । नागा यक्षाश्च गन्धर्वा दिक्पाला दिग्गजा दिशः ॥६५॥
वसवोऽष्टौ त्रयः काला रुद्रा एकादश स्मृताः । तारका द्वादशादित्यास्त्वमेव रघुनायक ॥६६॥
सप्त द्वीपाः समुद्राश्च नदा नद्यस्तथा द्रुमाः । स्थावरा जंगमाश्चैव त्वमेव रघुनन्दन ॥६७॥
देवतिर्यङ्मनुष्याणां दानवानां दिवौकसाम् । माता पिता तथा भ्राता त्वमेव रघुनन्दन ॥६८॥
सर्वेशस्त्वं परं ब्रह्म त्वद्रूपं विश्वमेव च । त्वमक्षरं परं ज्योतिस्त्वमेव रघुपुंगव ॥६९॥
शान्तं सर्वगतं सूक्ष्मं परं ब्रह्म सनातनम् । राजीवलोचन रामं प्रणमामि जगत्पतिम् ॥७०॥

ततः प्रसन्नः श्रीरामः प्रोवाच वृषभध्वजम् ।

श्रीराम उवाच

तुष्टोऽहं गिरिजाकांत वृणीष्व वरमुत्तमम् ॥७१॥

श्रीशिव उवाच

यदि तुष्टोऽसि देवेश श्रीराम करुणानिधे । तवाद्य दर्शनेनैव कृतार्थोऽहं न संशयः ॥७२॥
धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं पुण्योऽहं पुरुषोत्तम । अद्य मे सफलं कर्म ह्यद्य मे सफलं तपः ॥७३॥
अद्य मे सफलं ज्ञानमद्य मे सफलं श्रुतम् । अद्य मे सफलं सर्वं त्वत्पदांभोजदर्शनात् ॥७४॥
अद्वैतं विमलं ज्ञानं त्वमन्नामस्मरणं तथा । त्वत्पदांभोरुहद्वन्द्वे सद्भक्तिं देहि राघव ॥७५॥
ततः परं सुसंप्रीतो रामः प्राह सदाशिवम् । गिरिजेश महाभाग पुनरिष्टं ददाम्यहम् ॥७६॥

श्रीशिव उवाच

वरं न याचे रघुनाथ युष्मत्पदाब्जभक्तिः सततं ममास्तु ।
इदं प्रियं नाथ वरं प्रयच्छ पुनः पुनस्त्वामिदमेव याचे ॥७७॥

श्रीरामदास उवाच

इत्येवमीडितो रामः प्रादात्तस्मै वरांतरम् । तेनोक्तस्तवराजाय ददौ नानावरान् बहून् ॥७८॥

ऋषि, सिद्ध, साध्य, मुनि, विप्र, वेद, यज्ञ, पुराण तथा धर्मोंकी संहिता ये सब तुम्हीं हो ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ हे रघुनायक ! वर्ण, आश्रमधर्म, वर्णधर्म, नाग, यक्ष, गन्धर्व, दिक्पाल, दिग्गज, दिशाएँ, वसु, तीनों काल, एकादश रुद्र, ताराएँ और द्वादश आदित्य ये सब तुम्हीं हो ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ सातों द्वीप, समुद्र, नद, नदियाँ तथा वृक्ष आदि स्थावर जङ्गम समस्त वस्तु तुम्हीं हो । देव, तिर्यक्, मनुष्य, दानव, देवता, माता, पिता, भ्राता, मैं भी सब तुम्हीं हो ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ तुम्हीं सर्वेश हो, स्वरस्वरूप ब्रह्म हो, यह संसार भी तुम्हारा ही रूप है, तुम अक्षर हो, परम प्रधान ज्योति हो । और मै कहाँ तक बतलाऊँ, हे रघुपुङ्गव ! मेरे सब कुछ एकमात्र तुम्हीं हो ॥ ६९ ॥ शान्त, सर्वगत, सूक्ष्म, परब्रह्म, सनातन, जगत्पति और राजीवलोचन रामचन्द्रजीको मैं प्रणाम करता हूँ । इस प्रकारकी स्तुति सुनकर रामचन्द्रजीने शिवजीसे कहा—हे गिरिजाकांत ! मैं तुम्हारे ऊपर परम प्रसन्न हूँ । जो भी चाहो, सो उत्तम वर माँग लो ॥ ७० ॥ ७१ ॥ श्रीशिवजीने कहा—हे राम ! हे करुणानिधे ! यदि आप मेरे ऊपर प्रसन्न हैं तो मैं आपकी इस प्रसन्न मूर्तिको ही देखकर कृतार्थ हो गया ॥ ७२ ॥ हे पुरुषोत्तम ! मैं धन्य हूँ और अतिशय पवित्र हूँ । आज मेरे सब कार्य सफल हो गये । मेरी तपस्याएँ सफल हुईं, मेरा ज्ञान सफल हो गया और शास्त्रोंका श्रवण करना भी सार्थक हो गया । आपके इन चरणकमलोंके दर्शनसे ही मेरा सब कुछ सफल तो गया ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ हे कृपानाथ ! यदि आपको वर ही देना हो तो मुझे अपना अद्वैत तथा विमल ज्ञान दीजिए । मुझे अपने नामका कीर्तन करानेकी शक्ति और अपने इन चरणकमलोंकी सद्भक्ति दीजिए ॥ ७५ ॥ इसके अनन्तर अतिशय प्रसन्न होकर रामचन्द्रजीने शिवजीसे कहा—हे गिरिजेश ! हे महाभाग ! मै तुम्हारे अभिलषित वरोंको देनेके लिए प्रस्तुत हूँ, माँगो ॥ ७६ ॥ शिवजीने कहा—हे रघुनाथ ! मैं कोई वरदान नहीं चाहता । मैं चाहता यही हूँ कि सदा आपके चरणोंमें मेरी भक्ति बनी रहे । हे नाथ ! मुझे यही वर प्रिय है और यही देनेके लिए मै आपसे बारम्बार अनुरोध करूँगा

एवं शिवेन यः प्रोक्तः स्तवराजः शुभावहः । स एवाद्य त्वया पृष्टस्तवाग्रे कथितो मया ॥७९॥
अयं श्रीरघुनाथस्य स्तवराजो ह्यनुत्तमः । सर्वसौभाग्यसंपत्तिदायको मुक्तिदः स्मृतः ॥८०॥
कथितो गिरजेशेन तेनादौ सारसंग्रहः । गुह्याद्गुह्यतरो नित्यस्तव स्नेहात्प्रकीर्तितः ॥८१॥
यः पठेच्छृणुयाद्वापि त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः । ब्रह्महत्यादिपापानि तत्समानि बहूनि च ॥८२॥
हेमस्तेयसुरापानगुरुतल्पायुतानि च । गोवधाद्युपपापानि चिंतनात्संभवानि च ॥८३॥
सर्वैः प्रमुच्यते पापैः कल्पायुतशतोद्भवैः । मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम् ॥८४॥
श्रीरामस्मरणेनैव व्यपोहति न संशयः । इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यं नैवान्यदुच्यते ॥८५॥
रामः सत्यं परं ब्रह्म रामात्किंचिन्न विद्यते । तस्माद्रामस्वरूपं हि रामः सर्वमिदं जगत् ॥८६॥

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश ।
राजाधिराज रघुनायक रामचंद्र दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि ॥८७॥

उत्फुल्लामलकोमलोत्पदलश्यामाय रामाय चाकामाय प्रशमाय निर्मलगुणग्रामाय रामात्मने ।
ध्यानारूढमुनींद्रमानससरोहंसाय संसारविध्वंसाय स्फुरदोजसे रघुकुलोत्तंसाय पुंसे नमः ॥८८॥
एवं शिष्य मया प्रोक्तो यथा पृष्टस्त्वया मम । स्तवराजो राघवस्य श्रवणात्पापनाशनः ॥८९॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे विलासकाण्डे वाल्मीकीये
शंकरकृतरामस्तवराजो नाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

द्वितीयः सर्गः

(राम द्वारा सीताके सौन्दर्यका वर्णन)

विष्णुदास उवाच

गुरो ते प्रष्टुमिच्छामि तत्त्वं मां वक्तुमर्हसि । अयोध्यायां राघवेण सीतयाऽतिसुरूपया ॥ १ ॥

॥ ७७ ॥ श्रीरामदासने कहा—इस प्रकार स्तुति करनेपर रामचन्द्रजीने शिवजीके इच्छानुसार वर दिया और अपने मनसे भी उनको बहुतसे ऐसे वर दिये, जिनको शिवजीने माँगा ही नहीं था ॥ ७८ ॥ इस प्रकार शङ्करजी-का कहा हुआ शुभदायक 'रामस्तवराज' मैंने तुम्हारे पूछनेपर कह सुनाया ॥ ७९ ॥ यह रामचन्द्रजीका स्तवराज सब स्तोत्रोंमें श्रेष्ठ है। यह सब प्रकारके सौभाग्य, सम्पत्ति और मुक्तिको देनेवाला है ॥ ८० ॥ शिवजीने वेदोंका सारअंश निकालकर इसमें रख दिया है और यह अत्यन्त अलभ्य वस्तु है। किन्तु तुम्हारे सच्चे प्रेमके वशीभूत होकर मैंने तुमको बतलाया है ॥ ८१ ॥ जो प्राणी सुबह-शाम या तीनों कालमें इसका पाठ करता है, उसके ब्रह्महत्या जैसे महान् पातक तथा सुवर्णका चुराना, मद्यपान, गुरुके बिछौनेपर लेटना, गोवध, किसी प्रकारके मानसिक पाप आदि जो सैकड़ों कल्पसे एकत्रित हो गये हों, वे सब श्रीरामस्तवराजके स्मरणमात्रसे नष्ट हो जाते हैं। यह बात बिल्कुल सच है। इसमें किसी प्रकारका धोखा न समझना चाहिए ॥ ८२-८५ ॥ रामचन्द्र सत्य परब्रह्म हैं। उनसे बढ़कर और कोई है ही नहीं। अतएव यह समस्त संसार रामका ही स्वरूप है ॥ ८६ ॥ हे रामचन्द्रजी ! हे रघुपुङ्गव ! हे राजाओंमें श्रेष्ठ ! हे रघुनायक ! हे राघवेश ! हे राजाधिराज ! हे रामचन्द्र ! मैं एक अकिञ्चन दास आपकी शरणमें आया हूँ ॥ ८७ ॥ नवविकसित निर्मल नील-कमल-दल सरीखे जिनका श्याम स्वरूप है, जिनको किसी प्रकारकी कामना नहीं है, जो पूर्ण शान्तमूर्ति हैं, जो निर्मल गुणोंके राशिस्वरूप हैं, जो ध्यानारूढ़ मुनियोंके मनमानसके हंस हैं, जो अपने भ्रूभङ्गमात्रसे संसारको विध्वंस करनेमें समर्थ हैं, ऐसे रघुवंशभूषण तथा परम पुरुष रामचन्द्रजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ८८ ॥ हे शिष्य ! इस तरह मैंने तुम्हारे प्रश्नानुसार यह पापराशिनाशक स्तवराज तुम्हें सुना दिया ॥ ८९ ॥

इति श्रीमदानन्दरामायणे पं० रामतेजपांडेयकृत 'ज्योत्स्ना' भाषाटीकासमन्विते विलासकाण्डे प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

विष्णुदासने कहा—हे गुरो ! मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि अयोध्यामें परम रूपवती सीताके